7

आम जन तक अनुसन्धान पहुँचाने के लिए वानिकी विस्तार

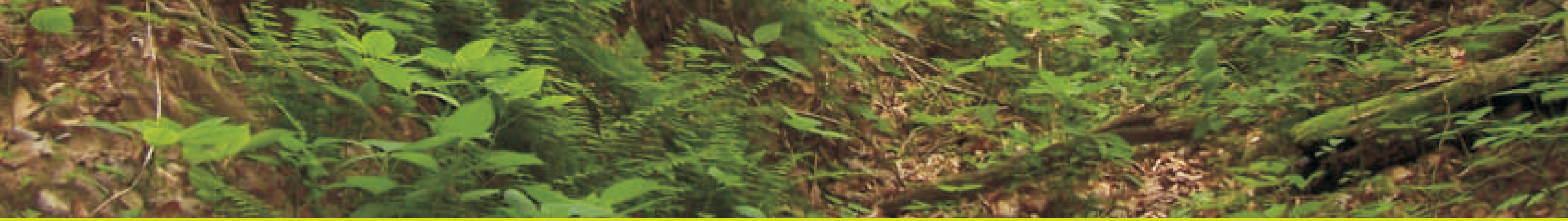

आम जन तक अनुसन्धान पहुँचाने के लिए वानिकी विस्तार

परिषद् को विस्तार रणनीतियाँ परिकल्पित करने, उसकी आवधिक पुनरीक्षण करने तथा हितधारकों एवं अन्त उपभोक्ताओं को अनुसन्धान परियोजनाओं के अधीन विकसित प्रौद्योगिकियों के प्रभावी प्रचार के लिए दिशानिर्देश जारी करने के लिए अध्यादेशित किया गया है। यह साधारण कार्यान्वित होने वाली प्रौद्योगिकियों को लक्षित समूह मुख्यत: किसानों को हस्तांतरित करने का प्रयास करता है। यह वानिकी विस्तार कार्यक्रमों के विकास तथा प्रसार के लिए भी कार्य करता है। यह भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों तथा केन्द्रों की विभिन्न विस्तार क्रियाकलापों का भी समन्वयन करता है। यह वानिकी, पर्यावरण तथा सम्बन्धित विज्ञानों तथा पर्यावरण प्रभाव आकलन तथा अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में परामर्श/तकनीकी सेवाए उपलब्ध करवाता है। परिषद् विभिन्न योजनाओं जैसे वन विज्ञान केन्द्र, प्रदर्शन ग्राम, डायरेक्ट–टू–कन्ज्यूमर तथा विभिन्न विस्तार क्रियाकलापों को आयोजित करके या उसमें सहभागिता करके तथा गुणवता प्रकाशन के द्वारा पणधारियों तक अनुसन्धान निवेश को पहुंचाता है।

7.1. वानिकी रिपोर्टो/जनरल का संग्रह, संकलन तथा प्रकाशन

7.1. प्रकाशन :

❖ भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय द्वारा वर्ष के दौरान निम्नलिखित पुस्तकें तथा न्यूलैटर प्रकाशित किये गये:

- भारत की वन जैवविविधता के अद्भुत खजाने पर एक नजर के लिए ''**फॉरेस्ट बायोडाइवर्सिटी एन इंडिया**'' पर एक काफी टेबल पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक का विमोचन दिनांक 17 अक्टूबर 2012 को हैदराबाद में सी.बी.डी. के सी.ओ.पी.–।। के दौरान श्रीमती जयन्ती नटराजन, माननीय वन मंत्री (स्वतन्त्र प्रभाग), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया।
- वानिकी सैक्टर के प्रदर्शन को प्रतिबिम्बित करने के लक्ष्य के साथ ''**फॉरेस्ट सैक्टर रिपोर्ट**'' पर एक पुस्तक प्रकाशित की। पुस्तक का विमोचन श्रीमती जयन्ती नटराजन, माननीय वन मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 17 अक्टूबर 2012 को हैदराबाद में सी.बी.डी. के सी.ओ.पी.–।। के दौरान किया गया।
- भा.वा.अ.शि.प. ने एक पुस्तिक ''**फॉरेस्ट्री रिसर्च आई.सी.एफ.आर.आई. सपोर्टिंग रूरल एण्ड ट्राईबल लाईवलीहुड**'' प्रकाशित की है। इस पुस्तक में भा.वा.अ.शि.प. की मुख्य अनुसन्धान उपलब्धियाँ यथा: हाल की प्रौद्योगिकियाँ, उत्पाद प्रक्रियांए तथा विस्तार रणनीतियों का वर्णन है। यह उन लोगों जो ग्रामीण, सीमांत वनों तथा वन क्षेत्रों में रहते है के लिए अत्यन्त लाभदायक होने के साथ–साथ अन्य हितधारकों जैसे वन विभागों तथा उद्योगों के लिए भी लाभदायक है।
- भा.वा.अ.शि.प. की वार्षिक प्रतिवेदन, वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''तरूचिंतन'' तथा छमाही भा.वा.अ.शि.प. न्यूजलैटर तथा वानिकी समाचार।
- एक पुस्तक ''चैनजिंग फ्रंटीयरर्स ऑफ रिसर्च प्रोग्राम इन आई.सी.एफ.आर.ई. बेस्ड ऑन XIII रिसर्च पोलिसी कमैटी (आर.पी.सी.) 2012 मीटिंग'' प्रकाशित की गई, जिसमें परिषद् के अनुसन्धान योजना तथा प्राथमिकताओं में हाल ही में किये गये नये प्रयासों को उजागर किया गया है।
- एक पुस्तक ''**आई.सी.एफ.आर.ई. विजन 2040**'' प्रकाशित की गई जो कि परिषद् के वानिकी अनुसन्धान तंत्र को एक नई दिशा देगी। यह खाद्य सुरक्षा, आजीविका सहायता, जैवविविधता संरक्षण, पारिस्थितकीय सुरक्षा, वन आनुवंशिक संसाधन प्रबन्धन की उत्पादकता सुधारने तथा

जलवायु परिवर्तन तथा इसके अनुकूलन/शमन रणनीतियों को भी दर्शाती है।

- ''**फॉरेस्ट्री स्टैस्टिक इंडिया 2011**'' सांख्यिकी प्रभाग द्वारा प्रकाशित की गई तथा दिनांक 22 जनवरी 2013 को महानिदेशक भा.वा.अ.शि.प. द्वारा विमोचित की गई।
- ''टिम्बर बैम्बू ट्रेड बुलेटिन'' वाल्यूम 64 तथा 65 प्रकाशित किये गये।
- ''गाईडबुक ऑन एफॉरेस्टेशन एण्ड रीफोरस्टेशन सी.डी. एम. प्रोजेक्टस इन इंडिया'' प्रकाशित की गई।
- वन तथा जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में नवीन विकास तथा होने वाले कार्यक्रमों को कवर करती हुई ''आई.सी.एफ.आर.ई. कलाईमेट न्यूज'' (चार संस्करण) तैयार किये गये तथा भा. वा.अ.शि.प. वेबसाइट पर अपलोड किये गये।

❖ स्लेम परियोजना के अधीन निम्नलिखित प्रकाशन प्रकशित किये गये।

- स्लेम सी.पी.पी. न्यूजलैटर अंक–3 संख्या–1 तथा अंक–4 संख्या–1
- सैमीनार ''हैल्दी स्वाइल : हैल्दी लाईफ'' तथा एक संवादात्मक कार्यशाला ''फाइडिंग आफ द बेसलाईन स्टडी एण्ड मोनिटरिंग एण्ड एजूकेशन फ्रेम वर्क'' की कार्यवाही।
- ''पार्टीसिपेटरी मॉडल फॉर वाटर हारवेसटिंग एण्ड डैवल्पमैन्ट ऑफ कम्यूनिटी पैसचर्स इन थार डैजर्टस'', ''रीहैबिलीटैशन ऑफ डिग्रेडिड बम्बू फॉरेस्ट इन मध्य प्रदेश'', ''अगरबत्ती प्रिपेरेशन फ्रॉम डिग्रेडिड बम्बू फॉरेस्ट ऑफ मध्य प्रदेश'', ''अग्रो–बायोडायवार्सिटी इनोवेशनस फॉर सस्टेनेबल लैंड एण्ड इकोसिस्टम मैनेजमैंट इन उड़ीसा'' तथा ''सस्टेनेबल लैंड एण्ड इकोसिस्टम मैनेजमैंट एन शिफ्टिंग कल्टीवेशन एरियास ऑफ नागालैंड''
- भा.वा.अ.शि.प. द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्ध जर्नलों में कुल 359 अनुसन्धान लेख प्रकाशित किये गये जिनका वर्ष के दौरान विवरण निम्नलिखित है :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	वैज्ञानिक जर्नल तथा पुस्तकों में प्रकाशित अनुसन्धान लेखों की संख्या		
		राष्ट्रीय जर्नल	विदेशी जर्नल	पुस्तक में अध्याय
1.	व.अ.सं., देहरादून	56	31	17
2.	का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर	45	16	21
3.	व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	22	14	28
4.	शु.व.अ.सं., जोधपुर	17	12	08
5.	व.व.अ.सं., जोरहाट	16	10	03
6.	उ.व.अ.सं., जबलपुर	16	01	01
7.	हि.व.अ.सं., शिमला	07	04	01
8.	व.उ.सं., राँची	07	01	02
9.	व.जै.सं., हैदराबाद	–	02	01
	कुल	**186**	**91**	**82**

❖ निम्नलिखित विवरण के अनुसार भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा वर्ष के दौरान कुल 72 अनुसन्धान लेख सैमीनार/ कॉन्फ्रेस/कार्यशालाओं में प्रस्तुत किये गये तथा 62 सारांश तथा 19 लोकप्रिय लेख प्रकाशित किये गये :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	सैमीनार/सम्मेलन/कार्यशालाओं में प्रस्तुत किये गये लेखों की संख्या तथा सारांश तथा लोकप्रिय लेख		
		प्रस्तुत किये गये लेख	प्रकाशित सारांश	लोकप्रिय लेख
1.	व.अ.सं., देहरादून	29	11	06
2.	व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	15	09	01
3.	शु.व.अ.सं., जोधपुर	06	18	–
4.	हि.व.अ.सं., शिमला	08	03	02
5.	का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर	12	–	–
6.	व.व.अ.सं., जोरहाट	01	12	10
7.	उ.व.अ.सं., जबलपुर	01	09	09
	कुल	**72**	**62**	**28**

- निम्नलिखित विवरण के अनुसार वर्ष के दौरान भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा कुल 16 पुस्तकें तथा 21 पुस्तिकाएं, बाऊशर/प्रचार पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई :

क्र.सं.	संस्थान का नाम	पुस्तक, पुस्तिकाओं, ब्राऊशर/प्रचार पुस्तिकाओं की संख्या	
		पुस्तकें	पुस्तिकों, ब्राऊशर/प्रचार पुस्तिकाएं
1.	व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	4	9
2.	का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर	3	6
3.	हि.व.अ.सं., शिमला	4	4
4.	व.अ.सं., देहरादून	4	–
5.	व.उ.सं., रांची	1	1
6.	व.व.अ.सं., जोरहाट	–	1
	कुल	**16**	**21**

7.1.2. राष्ट्रीय वन पुस्तकालय तथा सूचना केन्द्र

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय तथा सूचना केन्द्र (रा.व.पु.सू.के.) वानिकी तथा सम्बन्धित विज्ञानों के दस्तावेज संग्रहण में सबसे अधिक समृद्ध है। यह उपभोक्ताओं को सभी प्रकार की पुस्तकालय तथा सूचना सेवाए उपलब्ध करवाता है। वर्ष के दौरान 26372 पुस्तके बाहर पढ़ने के लिए उपभोक्ताओं को दी गई तथा 55,448 दस्तावेजों को पुस्तकालय के भीतर पढ़ने हेतु दिया गया।

राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा सूचना केन्द्र के दस्तावेज संग्रह को 3757 पुस्तकों तथा अन्य प्रलेखों से समृद्ध बनाया गया है। इसने 61 भारतीय तथा 100 विदेशी आवधिक टाइटल के लिए अंशदान दिया तथा 485 आवधिक टाइटल बिना मूल्य के प्राप्त किये। इसने भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों तथा इसके केन्द्रों के लिए 47 सर्वाधिक लाभदायाक ई–जनरलों के लिए अंशदान किया। ''फॉरेस्ट साइस डाटाबेस'' पर एक बिबलियो ग्राफिकल आंकडा आधार तथा स्कोपस (SCOPUS) के लिए भी अंशदान किया गया जिससे भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों तथा केन्द्रों की वानिकी पर पुराने तथा नये अनुसन्धान लेख तथा सारांशों तक पहुँच बन सके।

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र ने राज्य वन विभागों तथा विश्वविद्यालयों इत्यादि को अपने बुक डिपो के द्वारा भा.वा.अ.शि.प. के प्रकाशन (435 पुस्तके तथा 13 वी.सी.डी) बेचे।

7.1.3. पर्यावरणीय सूचना तंत्र केन्द्र

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने राष्ट्रीय वन पुस्तकालय तथा सूचना केन्द्र में वानिकी पर पर्यावरणीय सूचना तंत्र (ई.एन.वी.आई.एस.) स्थापित किया है। यह इनविस वर्ष के दौरान ऑनलाइन पहुँच वाले आंकडा आधार (भारतीय वानिकी सारांश, सहभागिता वन प्रबन्धन, *प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा*, पॉपलर, पर्यावरण तथा वन) में नये संदर्भो को जोड कर समृद्ध बनाया गया। इसने ''इन्विस फॉरेस्ट्री बुलेटिन'' के दो अंक प्रकाशित किये है तथा ''एनवायरमेंट एण्ड फॉरेस्ट न्यूज डाइजेस्ट'' के पांच अंकों को संकलित किया है।

7.2. विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रसार

7.2.1. वन विज्ञान केन्द्र (वी.वी.के.) तथा प्रदर्शन ग्राम (डी.वी.)

- वन विज्ञान केन्द्र (वी.वी.के.) चंडीगढ़ तथा पिंजौर (हरियाणा) में वन विभाग केन्द्रों में वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने मॉडल पौधशाला स्थापित की। अन्य वन विज्ञान केन्द्रों में मॉडल पौधशाला की स्थापना भी प्रारम्भ की गई है।
- प्रदर्शन ग्राम श्यामपुर (देहरादून) ने कम मूल्य वाली धुन्धकक्ष, प्रवर्धन एकक, सिंचाई सुविधा, फ्रेम में लगी हुई एगल आयरन की क्यारियां, शेड हाऊस, बीज शुष्कन मंच, वर्मी कम्पोस्ट एकक तथा जड़ ट्रेनर सहित एक पौधशाला विकसित की है।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में वृक्ष उत्पादक मेला

- वी.वी.के. तथा के.वी.के. की नेटवर्किंग के अधीन 10 दिसम्बर 2012 को के.वी.के टिंडीवनम में कुडालूर पोंडीचेरी तथा विलुपुरम जिलों के वृक्ष उत्पादकों के साथ एक संवादात्मक बैठक की गई।
- वी.वी.के. पोर्ट ब्लेअर (अंडमान निकोबार द्वीप समूह) में वानस्पतिक सर्वेक्षण पर अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह के अग्रगामी स्टॉक तथा कर्मियों के लिए स्थल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने 21 तथा 22 फरवरी 2013 को पांचवां वृक्ष उत्पादक मेला आयोजित किया। वृक्ष उत्पादक मेला के एक भाग के रूप में ''धारणीय वृक्ष खेती : काष्ठ सुरक्षा खाद्य सुरक्षा तथा आजीविका अवसर'' पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस वृक्ष उत्पादक मेला में तमिनाडु के सभी जिले, केरल में पुडुचेरी तथा पालककड जिले के 1700 किसानों ने भाग लिया।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने वन विज्ञान केन्द्रों को नियमित बजट सहयोग तथा हिन्दी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर सहित्य उपलब्ध करवाया है।
- वी.वी.के., बिच्छावल पौधशाला बीकानेर (राजस्थान) में उन्नत पौधशाला स्थापित की तथा 2012-13 के दौरान वी.वी.के. अधीन कृषि वानिकी को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों को प्रदर्शन तथा वितरण हेतु उन्नत पौधाशाला में *प्रोसोपिस सिनेरेरिया* तथा *डैल्बर्जिया सिस्सू* के 3000 गुणवत्ता अंकुर उगाए गए।
- वी.वी.के., छिपारडी बीडी (गुजरात) में उन्नत पौधशाला पोषित की गई तथा *एम्बलिका औफेसिनालिस* तथा *जिजिफस मार्शियाना* के ग्राफ्टिड पादप तथा *कैज्वरीना इक्वीसैटीफोलिया* तथा *यूकेलिप्टस* हाइब्रीड के उच्च गुणवत्ता अंकुरों को उगाया गया ताकि किसानों के बीच कृषि वानिकी को प्रोत्साहित किया जा सके।

- प्रदर्शन ग्राम सालावास (जोधपुर) में विभिन्न वन संवर्धनीय पद्धतियों द्वारा पौधशाला पोषित की गई। मृदा तथा जल संरक्षण पर प्रौद्योगिकियों प्रदर्शित की गई तथा प्रदर्शन ग्राम में स्थाने जल संरक्षण पद्धति के साथ *सैन्करस सिलिआरिस* घास के साथ *कार्डिया घराफ* तथा *जिजीफस न्यूमीलेरिया* का वन चरागाही मॉडल तैयार किया गया।
- प्रदर्शन ग्राम, ग्राम गौरव, गुमला (झारखण्ड) में हर्बल बागान तथा औषधीय पादप प्रवर्धन एकक पोषित किये गये। नियमित रखरखाव तथा तेल निष्कर्षण एकक के प्रदर्शन, वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन तथा बांस प्रवर्धन तकनीके वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा की गई।
- प्रदर्शन ग्राम लानाबांका, सिरमौर (हि.प्र.) में प्रदर्शन पौधशाला, प्रदर्शन रोपण तथा वर्मी-कम्पोस्ट एकक पोषित किया गया। 28 जनवरी 2013 को हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा प्रदर्शन ग्राम में एक कैम्प कार्यशाला-सह-ग्रामीणों की बैठक आयोजित की गई। हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग के अग्रगामी क्षेत्र कर्मचारियों तथा स्थानीय किसानों से 40 सहभागियों ने सक्रिय सहभागिता की। कृषि वानिकी प्रजातियों तथा औषधीय पादप प्रजातियों की खेती की प्रौद्योगिकियां लानाबांका के ग्रामीणों को स्थानांतरित की गई।
- अरूणाचल प्रदेश के दोयमुख चक्र के अधीन वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट द्वारा रोनो सभागार में ''नॉन टिम्बर फॉरेस्ट प्रोडक्ट ऑफ अरूणाचल प्रदेश, इटस प्रोस्टपैक्ट्स इन रूरल डवलेपमेंट'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 मार्च 2013 को आयोजित किया गया। 40 सहभागी मुख्यत: किसान उद्यमियों तथा विभिन्न विभागों जैसे बागवानी कृषि, पर्यावरण एवं वन, अरूणाचल प्रदेश सरकार के स्थल कर्मचारियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागिता की।
- वन विज्ञान केन्द्र, असम के अधीन 3 से 4 अप्रैल 2012 को वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट द्वारा बांस, बेंत तथा वर्मीकम्पोस्ट पर जोहाट के वन विभागों, वन विकास एजेंसियों, जोरहाट जिले के जे.एफ.एम.सी. सदस्यों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

वर्मीकम्पोजिशन पर स्थल प्रदर्शन

- अरूणाचल प्रदेश के बांदेर दीवा मंडल के अधीन ड्रपोंग वन रेंज कार्यालय में वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट द्वारा 21 मार्च 2013 को ''फॉरेस्ट एण्ड वाइल्ड लाइफ मैनेजमेंट इन अरूणाचल प्रदेश'' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 50 वन अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गई।
- वर्ष वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट ने प्रदर्शन ग्राम कार्यक्रम के अधीन होलोंगापारा गिब्बन वन्य जीव अभयारण्य के किनारे पर मेलांग ग्रांट, तीन ग्रामों का एक समूह में सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन कार्यक्रम स्थापित किया गया। एक स्थाई पौधशाला स्थापित की गई तथा *बैम्बूसा वुलगेरिस* वार. *वामिन* के गुणवत्ता रोपण भण्डार स्थापित किये गये। किसानों तथा अन्य एजेंसियों की मांग पर *एक्वालेरिया मैलासिनेनसिस* तथा *एन्थोसेफेलस* के अंकुर उगाए गए। किसानों ने *कैपसिक्म चिनेनस* (भूत जोलोकिया) के उत्पादन के द्वारा अतिरिक्त आय पैदा की।

7.2.2. डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना

भा.वा.अ.शि.प. ने एक नई योजना ''डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर'' योजना प्रारम्भ की है जिसमें प्रौद्योगिकी/अनुसन्धान खोजों की अधिकतम क्षमता को हितधारकों तक ले जाया जा

सकता है'' (किसानों, ग्रामीण गरीबों, वन विभागों तथा उद्योगों) डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूम योजना के अधीन जो परियोजनाए बनती है उनका ग्रामीण समुदायों के लिए अदभुत उपयोग होता जिन्हे ग्रामीण संस्थाओं के साथ संयुक्त रूप से कार्यान्वित किया जाता है।

व.अ.सं., देहरादून ने डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना के अधीन निम्नलिखित क्रियाकलाप किये :

- बांस प्रसंस्करण तथा प्रशिक्षण के लिए केन्द्र स्थापित किया गया।
- प्रशिक्षणों तथा संवादात्मक बैठकों के द्वारा रेशम उत्पादकों तथा रेशम उद्योग के लिए भा.वा.अ.शि.प. निधियीत परियोजना के अधीन विकसित ''समृद्धि'' उत्पादकों जागरूकता-सह-विस्तार क्रियाकलाप के लिए 30 मार्च 2013 को जिला देहरादून के अधीन शाहपुर तथा बल्लूवाला ग्रामों के किसानों के लिए ''हर्बल उत्पाद समृद्धि का उपयोग करते हुए गुणवत्ता रेशम उत्पादन'' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- पत्ता तथा टहनी ब्लाइट के विरूद्ध रोग प्रतिरोध के लिए सर्वश्री प्रगति बायोटैक के आशाजनक यूकेलिप्टस क्लोनों को जांचा गया।

व.अ.वृ.प्रसं., कोयम्बटूर ने डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना के अधीन निम्ननिखित क्रियाकलाप किये :

- *मेलिया डूबिया* आज किसानों में सबसे पसंदीदा प्रजाति है तथा उन्होने तमिलनाडु सरकार की योजना ''ट्री कल्टीवेशन इन प्राइवेट लिमिटेड लैंड (टी.सी.पी.एन.)'' योजना को स्थान प्राप्त किया है। संस्थान ने *एम. डूबिया* के गुणवत्ता रोपण स्टॉक (20 हे. क्षेत्र को कवर करने के लिए) उपलब्ध करवाया तथा वृहद प्रचार के लिए *मेलिया डूबिया* पर तमिल/अंग्रेजी में प्रकाशन/विस्तार सामग्री वितरित की।
- किसानों तथा वृक्ष उत्पादकों को आपूर्ति के लिए कैज्वरीना के कीट/रोग सहनशील क्लोनों को बहुगुणित किया गया।
- लाल तथा मीठी इमली के उत्कृष्ठ एशैसनों की ग्राफटिंग तथा क्लिफ ग्राफटिंग की गई तथा 2000 गुणवत्ता रोपण सामग्री उत्पादित की गई तथा वृक्ष उत्पादक मेला 2013 के दौरान विभिन्न हितधारकों को उपलब्ध करवाई गई।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना के अधीन निम्ननिखित क्रियाकलाप किये :

- कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली में ''मेहंदी तथा इस्बगोल'' का रोगों तथा कीटों से बचाव पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 मार्च 2013 को आयोजित किया गया तथा इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पाली जिले के (राजस्थान) के विभिन्न ग्रामों के 45 किसानों ने इसमें सहभागिता की।

कृ.वि.के., पाली में ''मेहन्दी तथा इसबगोल में नाशीकीटों तथा रोगों का प्रबन्धन'' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

- निम्नलिखित दो ब्राऊशर हितधारकों में वितरण के लिए हिन्दी में प्रकाशित किये गये।
    - मेंहदी फसलों पर हमला करने वाले रोग तथा कीटों से बचाव तथा रक्षण।
    - इस्बगोल फसलों पर हमला करने वाले रोग तथा कीटों से बचाव तथा रक्षण।
- शु.व.अ.सं., ने 13 मार्च 2013 को बांसवाडा में ''विकृत पहाडियों के पुनरूद्धार के लिए वर्षा जल संचयन तथा वनीकरण'' पर प्रशिक्षण-सह-कार्याशला आयोजित की गई। हितधारकों के वितरण के लिए हिन्दी तथा अंग्रेजी में निम्नलिखित ब्राऊशर प्रकाशित किये गये।
    - विकृत पहाडियों के पुनरूद्धार तथा लोगों की आजीविका के लिए वर्षा जल संचयन।
    - विकृत पहाडियों के पुर्नस्थापन के दौरान कार्बन पृथक्करण।

व.उ.सं., रांची ने डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना के अधीन निम्नलिखित क्रियाकलाप किये :

- वन सीमांत ग्रामों की ग्रामीण आजीवका को सुधारने के लक्ष्य के साथ झारखण्ड के खुंटी जिले के जिवरी तथा जानम पीड़ी ग्रामों में अगस्त 2012 को ''एक्सोपलोरेशन ऑफ लाख कल्टीवेशन आन नॉन ट्रेडेशनल हास्ट फ्लेमेंजिया एण्ड इटस पासिबिल्टी इन ससटेनेबल प्लांटेशन फॉरेस्ट्री'' पर एक परियोजना प्रारम्भ की गई। प्रथम अवस्था में 10297 फ्लेमेंजिया पादपों को किसानों में वितरित किया गया तथा क्षेत्र स्तर पर तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाई गई। इसके अतिरिक्त 8000 *फ्लेमेंजिया* पादप सितम्बर 2012 में किसानों में वितरित किये गये। 1600 पादपों से लाख का कटान फरवरी 2013 में किया गया। 245 किलो लाह किसानों द्वारा प्राप्त की गई। किसानों ने ब्रूड लाह को ₹1000/प्रति किलों की दर से बेचने के पश्चात् 2.45 लाख ₹ कमाया। *फ्लेमेंजिया सैमियालता* होस्ट पादप पर लाख खेती के द्वारा कमाई खूंटी जिले के लिए एक सफल मॉडल साबित हो रही है। यह मॉडल पूरे राज्य या देश के अन्य भागों में भी दोहराया जा सकता है।

हि.व.अ.सं., शिमला ने डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना के अधीन निम्नलिखित क्रियाकलाप किये :

- ग्राम खटनौल जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश में 8 सितम्बर 2012 को स्थानीय पंचायत के सदस्यों तथा प्रगतिशील किसानों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान सहभागियों को औषधीय पादपों विशेषकर आतिश, चौरा, कुटकी की खेती के विशेष संदर्भ के साथ सहभागियों में योजना की प्रासंगिकता को उजागर किया गया।

शिलारू पौधशाला, हि.व.अ.सं., शिमला में किसानों की एक्सपोजर यात्रा

- दिनांक 25 नवम्बर 2012 को जिला शिमला के खटनौल ग्राम के किसानों के कौशल उन्नयन हेतु ''आतिश तथा चौरा की पौधशाला तकनीक एक महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पादप'' पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- हिमाचल प्रदेश के खटनौल (शिमला) तथा निचार (किन्नौर) के प्रोत्साहित किसानों के लिए 16 मार्च 2013 को एक एक्स्पोजर विजिट शिलारू जिला शिमला (हि.प्र.) में आयोजित किया गया ताकि समशीतोष्ण औषधीय पादपों को उगाने के लिए विभिन्न तकनीकों का प्रयोगात्मक प्रदर्शन दिया जा सके।
- का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर ने डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना के अधीन 7 मार्च 2013 को बागलकोट में एक दिवसीय संवादात्मक-सह-सूचना वितरण विस्तार कार्यक्रम आयोजित किया। लगभग 112 किसानों, वृक्ष उत्पादकों, गैर सरकारी संगठनों तथा वन अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की।
- व.व.अ.सं., जोरहाट ने समय-समय पर प्रदर्शन ग्राम के आगंतुकों के लिए विभिन्न स्थल प्रदर्शन आयोजित किये तथा डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर योजना के अधीन बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण के लिए बांस कम्पोजिट पर प्रदर्शन ग्राम से नवयुवकों को प्रशिक्षित किया।
- व.उ.सं., हैदराबाद ने निर्मल में डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर के अधीन 9 मार्च 2013 को शिल्पकारों तथा किसानों को आजीविका उपलब्ध करवाने के लिए *गिवोटिया रौटलरीफार्मिस* ग्रिफिथ के कृषि वानिकी पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

7.2.3. प्रौद्योगिकी हस्तांतरित

- वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 18 जून 2012 से ₹ 1.4 लाख की लाइसेंस फीस के साथ सर्वश्री आनंद गोंद उद्योग को रीशेपिंग आफ गमस के लिए तकनीकी हस्तांतरित की गई।

- सर्वश्री श्री टी.एन.पी.एल. तथा सर्वश्री आई.टी.सी लिमिटेड को वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा *यूकेलिप्टस* तथा *कोरैम्बिया* के फुल सिब बीज विमोचित किये गये।

- 21 फरवरी 2013 को व.अ.वृ.प्र.सं. कोयम्बटूर द्वारा वृक्ष उत्पादक मेला के दौरान पृथक्कृत तथा सवंर्धित पोटाशियम मोबालाइजिंग सूक्ष्म जीवाणु *फ्रेटयूरिया औरेन्टिया* का कलचर उत्पाद के रूप में, जिसे मोबाइलाइजर कहा गया, विमोचित किया गया।

- व.अ.वृ.प्र.सं. कोयम्बटूर द्वारा हितधारकों को शोला प्रजाति की बीज संभालने की प्रौद्योगिकी हस्तांतरित की गई।

- व.अ.वृ.प्र.सं. कोयम्बटूर द्वारा ''विंड ब्रेक एगोफॉरेस्ट्री सिस्टम विद सुपिरियर क्लोन टू मिनिमाइज क्रोप डैमेज : ए प्रोटैक्टिव सपोर्ट टू प्लेनेटन ग्रोवरर्स'' के लिए प्रौद्योगिकी किसानों को हस्तांतरित की गई।

- काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा गुणवत्ता रोपण भण्डार से चन्दन रोपण उगाने के लिए प्रौद्योगिकी पैकेज हितधारकों को हस्तांतरित किया गया।

- *डैन्ड्रोकैलामस स्टाकसी* को उगाने के लिए वृहद प्रवर्धन तकनीक काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा हितधारकों को हस्तांतरित की गई।

- उष्णकटिबन्धीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर द्वारा 30 सितम्बर 2012 को ''आऊटरीच ऑफ रिसर्च फाइडिंग'' के लिए एक सैमीनार-सह-कार्यशाला कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम अर्जुन छाल के धारणीय कटान, वन पौधशालाओं में सफेद ग्रब के समेकित कीट प्रबन्धन, रोपणों में सागौन के नाशी कीटों का जैविक नियंत्रण, सागौन-हल्दी वन औषधीय तंत्र, महत्वपूर्ण अकाष्ठ वन प्रजातियों के बीज शुष्कन की ड्राट टाइप ड्रम ड्रायर तकनीक, मध्य भारत में विभिन्न तनाव स्थलों के लिए उपयुक्त वृक्ष प्रजतियां, टीक खुंटी उत्पादन के लिए वी.ए.एम. तथा एजोस्पीरिलिया उत्पाद तकनीक, *रैवोल्फिया सर्पेन्टीना* का वृहद प्रवर्धन, वन कीटों के प्रबन्धन के लिए मैटाराइजियम आधारित माइकोइन्सेक्टिसाइड (पैस्टस्टैट), जैव कीटनाशी उत्पाद, विलवेकम-*एगल मार्मीलोस* बीज तेल आधारित जैव कीटनाशी, रोपण स्थापना के लिए सूक्ष्म-जलग्रहण की स्थापना, बांस के रक्षात्मक उपचार के लिए उपकरण, *लैन्टाना कमारा* से हाथ से बने कागज, वन आग शमन औजारों के प्रदर्शन तथा वन आग प्रबन्धन के लिए आयोजित किया गया।

- पी.आर.ए. तकनीकों के लिए प्रौद्योगिकियां तथा सूक्ष्म योजना, बांस उपचार, वर्मीकम्पोस्ट, मधुमक्खी पालन, पचौली कृषि तकनीकें, ट्राइकोडर्मा उत्पादन तथा स्थल अनुप्रयोग, माइकोराइजल प्रौद्योगिकी, जैव कीटनाशक उत्पादन तथा स्थल अनुप्रयोग, बीज संभाल, श्रेणीकरण तथा बीजाई तकनीकें, मिर्च आधारित कृषि वानिकी मॉडल पर प्रौद्योगिको स्फैगनम का उपयोग करते हुए विभिन्न आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों की गुटटी बांधने पर प्रौद्योगिकी, कम लागत वर्मीकम्पोस्ट पर प्रौद्योगिकी तथा अगार, रोपणों को उगाने पर प्रौद्योगिकी तथा मस्कदाना (*एक्यूलेरिया मेलासिनेन्सिस*), (*एबलमोस्कस मोस्काटस*) की खेती की प्रौद्योगिकी वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट द्वारा अन्त उपभोक्ताओं को हस्तांतरित किया गया।

7.3. वानिकी अनुसन्धान में वृहद विस्तार रणनीतियों का विकास तथा समन्वयन

7.3.1. धारणीय भूमि तथा पारितंत्र प्रबन्धन (स्लेम)

वर्ष के दौरान परियोजना के अधीन निम्नलिखित क्रियाकलाप किये गये :

- देश भर से स्लेम घटकों यथा: भू निम्नीकरण, जैवविविधता संरक्षण, जलवायु परिवर्तन/संवेदनशीलता का भू-उपयोग पद्धतियों पर प्रभाव के लिए राष्ट्रीय तथा आठ चयनित राज्यों नामत: मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, नागालैंड, उत्तराखण्ड, केरल तथा उड़ीसा पर एक प्रारूप आधार रेखा अध्ययन रिपोर्ट तैयार की गई।

- ''हेल्दी स्वायल : हेल्दी लाइफ'' के विचार पर भा.वा.अ.शि.प. , देहरादून में मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस को मनाने के लिए 17 जून 2012 को एक सैमीनार आयोजित की गई। सेमीनार में भा.वा.अ.शि.प., व.व.अ.सं., के 125 वरिष्ठ अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों ने भाग लिया। सैमीनार में विचार विमर्श में जल उर्जा संरक्षण में मृदा की भूमिका तथा महत्व तथा जलवायु परिवर्तन में लचीलापन के महत्व को उजागर किया।
- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 16–17 जुलाई 2012 को स्लेम परियोजना के अधीन ''इंटरैक्टिव वर्कशाप आन फाइडिंगस आफ द बेसलाइन स्टडी एण्ड मोनीटरिंग एण्ड इवैल्यूएशन फ्रेम वर्क'' पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। दो दिवसीय विचार विमर्श विभिन्न विषयों क्षेत्रों यथा: भू–प्रबन्धन, जलवायु परिवर्तन, जैवविविधता संरक्षण, नीति तथा संस्थात्मक सुधार, अनुश्रवण तथा मूल्यांकन रूपरेखा स्लेम सी.पी.पी. के लिए संचार रणनीति पर आधार रेखा अध्ययन की खोजे पर केन्द्रित थी।
- राष्ट्रीय स्टीरिंग कमेटी (एन.एस.सी.) की चौथी बैठक 4 से 5 अप्रैल 2013 तक को हैदराबाद में आयोजित की गई। इस बैठक में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अधिकारियों, एन. एस.सी. के सदस्यों, वर्ल्ड बैंक, यू.एन.डी.पी. तथा एफ.ए. ओ. के प्रतिनिधि, स्लेम टी.एफ.ओ. सदस्यों, परियोजना सहभागियों के अधिकारी, स्पैक, केयर, मृदा तथा भू–उपयोग सर्वेक्षण, कृषि मंत्रालय, वन जैव विविधता संस्थान तथा एन. जी.ओ. सम्मिलित थे।

स्लेम क्रियाकलापों पर फ्लायर का विमोचन

- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 21 मार्च 2013 को ''इंटीग्रेटिंग फारेस्ट बेस्ड एन्टरप्राइजिस विद रूरल डवलेपमेंट फॉर लाइवलीहुड स्पोर्ट एण्ड इकोनामिक ग्रोथ'' पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में स्कीम ऑफ गर्वनेस में पंचायती राज संस्थानों (पी.आर.आई.) के महत्व तथा ग्रामीण संस्थाओं के सहयोग के साथ सरकारी नीतियों तथा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में भा.वा.अ.शि.प. की भूमिका को ऊजागर किया गया। ग्राम पंचायत से प्रतिनिधियों ने ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका उपलब्ध करवाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के संदर्भ में अपने अनुभव बांटे।
- उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर में 25–27 सितम्बर 2012 को मध्यप्रदेश वन विभाग के अग्रगामी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण माड्यूल में मृदा तथा जल संरक्षण, आजीविका के लिए लाह की खेती तथा बांस वनों के पुनर्स्थापन के विभिन्न पहलुओं को कवर किया गया।
- व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 29 से 31 अक्टूबर 2012 तक राजस्व, कृषि, बागवानी एवं पशु पालन विभागों के कर्मियों, गैर सरकारी संगठनों तथा किसानों के लिए ''रोल आफ बायोडाईवसिर्टी कंजरवेशन इन पावरटी एलीवेशन एण्ड रूरल लाइवलीहुड'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट में 25 से 27 फरवरी 2013 को ''शिफ्टिंग कल्टीवेशन प्रैक्टिसस विज–ए–विज लाइवलीहुड आपरचिनिटीज इन नोर्थ इस्ट इंडिया'' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य वन विभाग, विश्वविद्यालय, मृदा तथा जल संरक्षण प्रभाग, गैर सरकारी संगठनों के 25 सहभागियों तथा प्रगतिशील किसानों द्वारा भाग लिया गया।
- वन जैवविविधता संस्थान, हैदराबाद में 26–28 फरवरी

2013 को विभिन्न हितधारकों के लिए ''क्लाइमेट चेंज एडेप्टेबिलीटी एण्ड इम्पैक्ट आन लैंड डीग्रडेशन एण्ड बायोडायवर्सिटी कन्जरवेशन'' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

7.3.2. सैमीनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आयोजित

- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा जलवायु परिवर्तन विभाग, गुजरात सरकार के सहयोग से गान्धीनगर, गुजरात में रेड प्लस पर 27 से 28 सितम्बर 2012 एक संवादात्मक कार्यशाला आयोजित की गई।
- भा.वा.अ.शि.प. तथा व.अ.सं., देहरादून ने अक्टूबर 2012 में देहरादून में अन्तर्राष्ट्रीय पॉपलर कमीशन के 24वें सत्र तथा इसकी 46वीं कार्यकारी बैठक आयोजित की गई। यह प्रथम बार था कि जब आई.पी.सी. इस तरह का भव्य आयोजन भारत में आयोजित किया गया। इस वृहद समारोह के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्र भी साथ-साथ आयोजित किये गये। इन सत्रों में 23 देशों से 227 प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। भारत में राष्ट्रीय पॉपलर कमीशन की बैठक के अतिरिक्त नई प्रजातियों को सम्मिलित करते हुए इसे ''नैशनल कमीशन ऑन पॉपलर, विलो एण्ड अदर शॉट रूटेशन क्रोप्स'' के रूप में पुनर्नामित करके इसके स्कोप को बढ़ाया गया। वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में इसका सचिवालय स्थापित किया गया।

आई.पी.सी. के 24वें सत्र का उद्घाटन सत्र

- वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने निम्नलिखित का आयोजन किया :
  - पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना किसानों तथा अन्य पणधारियों के लिए 6-7 मार्च 2013 को तथा यमुना नगर में 23 मार्च 2013 को ''रोल ऑफ किसान मेला इन ससटेनेबल सप्लाई आफ वुड फॉर इंडस्ट्रीज'' पर कार्यशाला-सह-किसाना मेल आयोजित किया गया।
  - देहरादून में 3 से 4 अक्टूबर 2012 को ''सस्टेनेबल मैनेजमेंट प्रैक्टिसिस एण्ड लाइवलीहुड'' पर कार्यशाला।
  - हैदराबाद में 11 अक्टूबर 2012 को सी.बी.डी. सी.ओ.पी-11 के दौरान ''फॉरैस्ट्री इन्सैक्ट डायवर्सिटी इन इंडिया : फैक्टस एण्ड चैलेंजिज'' पर एक साइड कार्यक्रम आयोजित किया।
- वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने निम्नलिखित का आयोजन किया :
  - भारत ने साइट कार्यान्वयन में सम्मलित विभिन्न एजेंसियों के लिए''द कन्वेंशन ऑन इंटरनैशनल ट्रेड इन एन्डेन्जरड स्पीशीज ऑफ वाइल्ड फौना एण्ड फ्लोरा (साइटस)'' पर तीन जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला का आयोजन किया।
  - ''वैलीडेशन ऑफ डिस्क्रीप्टर्स ऑफ कैज्वरीना एण्ड यूकेलिप्टस'' पर 15 जून 2012 को पणधारियों की एक बैठक आयोजित की गई।
  - त्रिरूचिरापल्ली में 2 जुलाई 2012 को तमिलनाडु वन रोपण कारर्पोरेशन लिमिटेड के साथ पणधारियों की एक बैठक आयोजित की गई।
  - प्रधान मुख्य वन संरक्षक, तमिलनाडू वन विभाग, पानागल, मलीगाई, चिन्नई के कार्यालय में चौथी पणधारियों की बैठक 8 अगस्त 2012 को आयोजित की गई।
  - व.अ.वृ.प्र.सं., की केरल विभाग के साथ डिपार्टमेंट आफ फॉरैस्ट एण्ड वाइल्ड लाइफ हैडक्वाटर वाजुथा कौड, त्रिरूवनंतपुरम में 13 अगस्त 2012 को चौथी पणधारियों की बैठक हुई।
  - कृषि विज्ञान केन्द्र, विल्लूपूरम जो कि टिंडीवानम में अवस्थित है में वी.वी.के. तथा के.वी.के. की नेटवाकिंग के

अधीन 10 दिसम्बर 2012 को व.अ.वृ.प्र.सं., द्वारा एक वृक्ष उत्पादकों की संवादात्मक बैठक तथा *कैज्वरीना* अंकुरों का वितरण व.अ.वृ.प्र.सं. कोयम्बटूर द्वारा थाने चक्रवात प्रभावित किसानों के लिए किया गया।

- काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर ने निम्नलिखित का आयोजन किया :

- कर्नाटक वन विभाग के कर्मियों के लिए 21-24 अगस्त 2012 को ''चन्दन की लकड़ी तथा *मेलिया डूबिया* की खेती तथा पौधशाला पद्धतियां'' पर प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के सक्रिय सहयोग के साथ वृहद पर्यावरणीय प्रबन्धन योजना (सी.ई.एम.पी.) को अन्तिम रूप प्रदान करने के लिए 23 अक्टूबर 2012 को विचार मंथन सत्र आयोजित किया।
- पहली प्रौद्योगिकी मार्किटिंग बैठक 5 दिसम्बर 2012 तथा दूसरी प्रौद्योगिकी मार्किटिंग बैठक 14 दिसम्बर 2012 को आयोजित की गई। विभिन्न श्रेणी के 30 व्यवसायिकों ने इन कार्यक्रम में सहभागिता की।
- अगरबती पर 20 दिसम्बर 2012 को एक संवादात्मक बैठक।
- काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा 29 जनवरी 2013 तथा 22 फरवरी 2013 को ''वानिकी में समेकित वन प्रबन्धन'' पर संवादात्मक बैठक आयोजित की गई।
- के.एस.एफ.आई.सी./एन्टरप्रीनीयरों/उद्योगपतियों आरा मिल मालिकों/निर्माण क्षेत्र तथा बढ़ई के लिए उन्नत काष्ठ कार्य मशीनों पर 8 फरवरी 2013 की एक संवादात्मक बैठक।
- खेती अधीन चन्दन की लकड़ी के नाशीकीट तथा रोग की समस्याएं तथा उनका प्रबन्धन पर एक संवादात्मक सह सूचना बाँटने के लिए बैठक कृषि विज्ञान केन्द्र, बागलकोट कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड, कर्नाटक में 7 मार्च 2013 को काष्ठ विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा चन्दन उत्पादकों, किसानों तथा वन कर्मियों के लिए आयोजित की गई।

- उष्णकटिबन्धीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर द्वारा निम्नलिखित का आयोजन किया गया :

- अनुसन्धान खोजों को बाहर पहुँचाने के लिए नेटवार्किंग को सशक्त बनाने पर 30 नवम्बर 2012 को एक कार्यशाला
- ''वानिकी अनुसन्धान में हाल ही में हुई उन्नति तथा धारणीय अकाष्ठ वन उपज कटान'' पर एक कार्यशाला- सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम महाराष्ट्र राज्य वन विभाग के कर्मियों के लिए 4 से 7 मार्च 2013 को आयोजित किया गया।
- बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में अचनकमार अमरकंटक जीव मंडल रिजर्व के अग्रगामी कर्मचारियों के लिए ''अचनकमार अमरकंटक बोयोस्पेयर रिजर्व'' पर 23 मार्च 2013 को एक कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

- शु.व.अ.सं., जोधपुर ने निम्नलिखित का आयोजन किया :

- बांसवाडा (राजस्थान) में 13 मार्च 2013 को ''विकृत पहाड़ियों के पुनर्स्थापन के लिए वर्षा जल संचयन तथा वनीकरण'' पर प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला का आयोजन।
- जोधपुर में 16-18 अप्रैल 2012 को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के सहयोग से शुष्क तथा अर्ध शुष्क क्षेत्रों पर (सी.पी-ए.एस.ए.आर.) समन्वित कार्यक्रम के विकास के लिए कार्यशाला।
- राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों, अनुसन्धान संस्थानों मुख्य किसानों तथा गैर सरकारी संगठनों के अधिकारियों के लिए 22 अगस्त 2012 को जयपुर राजस्थान में हितधारकों की बैठक।
- एफ.टी.आई., गांधीनगर, गुजरात में 10 सितम्बर 2012 हितधारियों की बैठक जिसमें राज्य वन विभाग, विश्वविद्यालय अनुसन्धान संस्थान, मुख्य किसान तथा गैरसरकारी संगठनों ने सहभागिता की।
- जयपुर में राजस्थान राज्य जैवविविधता बोर्ड के साथ सहयोग करते हुए जैव विविधता पर 13 दिसम्बर 2012 को एक कार्यशाला।

- वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद ने 18 मार्च 2013 को हैदराबाद में वन जैव विविधता पर अनुसन्धान पद्धतियों पर संवादात्मक बैठक आयोजित की।

- हि.व.अ.सं., शिमला ने निम्नलिखित का आयोजन किया
- उच्च ऊचाई पादप शरीर विज्ञान अनुसन्धान केन्द्र, श्रीनगर के साथ सहयोग करते हुए श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड) में सातवें नेटवर्क परियोजना पर 27 सितम्बर 2012 को सहभागियों की कार्यशाला
- शिमला में 11 अक्टूबर 2012 को ''सतलुज बेसिन हिमाचल प्रदेश के वृहद पर्यावरणीय प्रभाव आकलन'' पर कार्यशाला-सह-समीक्षा बैठक।
- हिमाचल प्रदेश के राज्य वन विभाग के सहयोग से राजगढ़, सोलन (हि.प्र.) मे 31 जनवरी 2013 को कार्यशाला-सह-ग्रामीणों की बैठक।
- वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान ने निम्नलिखित का आयोजन किया :
- जोरहाट में 30 जुलाई से 1 अगस्त 2012 तक नागालैंड से 25 अधिकारियों के लिए ''वानिकी में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम का अनुप्रयोग'' पर प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला।
- जोहनेर सिनार ग्राम (सिलोनीजान) कारबी, एंगलोंग में 2 नवम्बर 2012 को ''निम्नीकृत झूम भूमि में 2 नवम्बर 2012 को ''निम्नीकृत झूम भूमि में बांस रोपण के द्वारा आजीविका

7.3.3. विशेष क्रियाकलाप

समारोह का नाम तथा तिथि	संस्थान का नाम	गतिविधियों का प्रदर्शन
हिमालयन दिवस 9 सितम्बर 2012	व.अ.सं., देहरादून, हि.व.अ.सं., शिमला, व.व.अ.सं., जोरहाट	पैनल चर्चा, वार्ता, कार्यशाला-''न्यू ग्रोथ मेजर्स फॉर द नेशन एंड हिमालय''
अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस 22 मई 2012	शु.व.अ.सं., जोधपुर	वृक्ष प्रजातियों के पौधे रोपित किए गए
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 11 मई 2012	व.अ.सं., देहरादून	एक विशेष प्रदर्शनी
सदभावना पखवाडा 20 अगस्त 2012 से 3 सितम्बर 2012	उ.व.अ.सं., जबलपुर	
वन महोत्सव	व.अ.सं., देहरादून, (2 जुलाई) (शु.व.अ.सं., जोधपुर) 19 जुलाई)	वृक्षारोपण
सतर्कता जागरूकता सप्ताह 29 अक्टूबर से 3 नवम्बर 2012	व.अ.सं., देहरादून, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर उ.व.अ.सं., जबलपुर, शु.व.अ.सं., जोधपुर, व.व.अ.सं., जोरहाट	
वन्य प्राणि संरक्षण सप्ताह 1 से 7 अक्टूबर 2012	उ.व.अ.सं., जबलपुर	
मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस 17 जून 2012	भा.वा.अ.शि.प., देहरादून; उ.व.अ.सं., जबलपुर, शु.व.अ.सं., जोधपुर	
विश्व वानिकी दिवस 21 मार्च 2013	व.अ.सं., देहरादून; व.अ.सं., जोरहाट	वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में 2500 विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने विश्व वानिकी दिवस में सहभागिता की
विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2012	व.अ.सं.,देहरादून (व.अ.सं. दिवस भी मनाया); शु.व.अ.सं., जोधपुर	पॉलीथन के विरूद्ध अभियान अपने पर्यवरण पर बच्चों हेतु पेंटिंग प्रतियोगिता

विकास तथा कार्बन पूल का निर्माण'' पर जागरूकता उत्पादन कार्यक्रम।

- बोरहोला, जोरहाट में 19 मार्च 2013 को 12 स्वयं सहायता समूह की 42 महिलाओं के लिए तथा सिपाही खोला (ब्लोक) जोरहाट में 23 मार्च 2013 को 30 स्वयं सहायता समूहों की 78 महिलाओं के लिए अगरबत्ती की तीलियां बनाने पर ''प्रोत्साहन तथा प्रशिक्षण सह कार्यशाला''।

7.4. परामर्शी सेवाएं

सेन्ट्रल एम्पार्वड कमेटी के द्वारा खनिज क्षेत्रों के वैज्ञानिक खनन तथा पारिपुनर्स्थापन के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय तथा कर्नाटक सरकार ने भा.वा.अ.शि.प. को पुनर्स्थापन तथा पुनरूद्धार (आर.एण्ड.आर.) योजना की तैयारी का कार्य भा.वा.अ.शि.प. को सौंपा है। वर्ष 2012-13 के दौरान भा.वा.अं.शि.प. द्वारा 60 आर एण्ड आर प्लानों को पूर्ण किया गया जिसे हाल ही में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अनुमोदित कर दिया है कर्नाटक राज्य में डेढ़ वर्ष तक बंद रहने के पश्चात् वैज्ञानिक खनन प्रारम्भ किया गया है।

भा.वा.अ.शि.प. ने पहले से निम्नीकृत क्षेत्रों के जैविक भौतिक तथा सामाजिक पुनर्स्थापन को सुनिश्चित करने के लिए कर्नाटक के बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिलों के लिए प्रारूप वृहद पर्यावरण प्रभाव आकलन तथा कार्यान्वयन योजना तैयार की है। भा.वा.अ.शि.प. जिलों के 106 अतिरिक्त खदानों के लिए आर.एण्ड.आर. योजना बनाने के लिए कार्य कर रही है जो कि वर्ष 2013-14 के दौरान पूरी हो जायेगी।

भा.वा.अ.शि.प. दो महत्वपूर्ण परियोजनाएं ''हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी बेसिन पर जल विद्युत परियोजना का वृहद पर्यावरणीय प्रभाव आकलन'' तथा ''उत्तराखण्ड राज्य में यमुना तथा टौंस तथा इसकी सहायक नदियों पर जल विद्युत परियोजनाओं का वृहद प्रभाव आकलन'' पर भी कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश की पांच अन्य जल ऊर्जा परियोजनाए भी हैं जिनका प्रभाव आकलन कार्य अन्तिम चरण में है। इसी प्रकार भूटान की बुनाका तथा संकोश बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजनाओं के लिए अध्ययन उन्नत अवस्था में है। बीना एक्टेंशन की कोयला खदानों तथा मध्य प्रदेश की कृष्णशीला ओ.सी.पी. की उत्तरी कोयला क्षेत्र लि., सिंगरौली जिले का जैव विविधता का अध्ययन 2012-13 में पूरा किया गया।

व.अ.सं., देहरादून ने विभिन्न पणधारियों को निम्नलिखित परामर्शी सेवाए उपलब्ध करवाई :

- काष्ठ तथा काष्ठ उत्पादों के परीक्षण के द्वारा 35 फर्मों को तकनीकी सेवाए उपलब्ध करवाई गई।
- रेलवे, सर्तकता, कस्टम, वन, एंटी करपशन, हाऊसिंग कॉरपोरेशन जीवन बीमा निगम, इंडिया आयल, एन.टी.पी.सी., सी.डब्ल्यू.डी, बी.एच.ई.एल, केन्द्रीय वेयर हाऊस कॉरपोरेशन, आयुध फैक्ट्री, पावर ग्रिड कॉरपोरेशन, नगर निगम, टूरिज्म एंड ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन, एम.ई.एस. टैलीकॉम, एन.बी.सी.सी.लि. के विभिन्न विभाग तथा निजी प्रकाष्ठ व्यापारियों को काष्ठ पहचान सेवाए उपलब्ध करवाई।
- विभिन्न पुलिस स्टेशनों, वन विभागों इत्यादि से प्राप्त बायोपाइरेसी के लिए पहचान सेवाए।
- सरकारी संस्थाओं तथा निजी उद्योगों जैसे रोजगार समाचार, नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, इंडियन रेलवे वाराणसी, इसरो, अहमदाबाद, राडेक्स स्टेशनरी, नई दिल्ली, रामा न्यूज प्रिंट, बिजनौर, श्री कृष्ण पेपर नई दिल्ली, आनंद ट्रिपलैक्स बोर्ड लि. मेरठ, आर्मी, नई दिल्ली, छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम, रायपुर, स्टेट प्रिंटिंग रूडकी, शिक्षा निदेशालय, देहरादून से प्राप्त कागज नमूनों को भौतिक तथा प्रकाशीय गुणों के लिए परीक्षित किया गया।
- तीन उद्योगों नामतः (I) सर्वश्री सनकेयर फार्मास्टूटिकल्स प्रा. लि., प्लॉट सं. 8, फार्मा सिटी सैलाकुई, देहरादून (I) सर्वश्री ससनाखुबाबा इंटरनैशनल, सिडकुल, हरिद्वार तथा (III) सर्वश्री औरो सुंदरम प्लाई तथा डोर प्रा. लि., भावनीपुर रूड़की को तकनीकी सेवाए उपलब्ध करवाई गई।
- सर्दन कूलिंग टावर प्रा.लि., कोलकाता के काष्ठ नमूनों को आवश्यक तेल तत्व के लिए परीक्षित किया गया।
- ता प्रोम मंदिर, कम्बोडिया में वृक्षों के संरक्षण के लिए अपसरा प्राधिकरण, कम्बोडिया तथा ए.एस.आई. को परामर्श।

- बोधगया में बोधीवृक्ष के रखरखाव तथा संरक्षण के लिए बोधगया मंदिर प्रबन्धन समिति को परामर्श।
- बोधगया बिहार में महा बोधी वृक्ष की स्वास्थ्य स्थिति को निरीक्षण करना परामर्शी परियोजना।
- ज्योतिसर, कुरूक्षेत्र में वटवृक्ष के संरक्षण के लिए कुरूक्षेत्र विकास बोर्ड को परामर्श

बिल्ट ट्री टैक लिमिटेड के लिए *कैज्वरीना* बीज बागानों पर व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने परामर्शी परियोजना प्रारम्भ की।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर द्वारा विभिन्न संस्थाओं को काष्ठ पहचान, नमी तत्व का निर्धारण, घनता तथा मजबूती गुणों पर सेवाएं दी गई।

उष्णकटिबन्धीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने ''हरित आवरण का आकलन तथा इसके प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष लाभ तथा एस.टी.पी.पी.-कोरबा परियोजना के लिए वृक्ष आच्छादन प्रबन्धन योजना''पर अभ्यास किया।

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर ने सालावास, जोधपुर तथा डाटासिखर में ओ.एन.जी.सी. द्वारा निधियीत ''शुष्क क्षेत्र कृषि वानिकी परियोजना'' के लिए रोपण स्थलों का मूल्यांकन किया। राज्य जैव ईधन प्राधिकरण, जोधपुर राजस्थान को राजस्थान में *जैट्रोफा करकस* को उगाने के लिए तकनीकी परामर्श उपलब्ध करवाया।

7.5. राजभाषा गतिविधियां

भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय तथा इसके संस्थान राजभाषा के उपयोग को दिन प्रतिदिन के कार्यों में राजभाषा का प्रयोग अधिकतम करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा नियमों और अधिनियमों के कार्यान्वयन की दिशा में कार्य कर रहे हैं। भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय में 19 दिसम्बर 2012 को ''सरकारी काम काज में हिन्दी को बढ़ावा'' पर एक हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से भा.वा.अ.शि.प. नियमित रूप से हिन्दी पत्रिका 'तरूचिंतन' तथा अर्धवार्षिक न्यूजलैटर 'वानिकी समाचार' प्रकाशित कर रही है।

भा.वा.अ.शि.प. में हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में दीप प्रज्जवलन

शु.व.अ.सं., जोधपुर भी नियमित रूप से हिन्दी पत्रिका 'आफरी दर्पण' का प्रकाशन कर रहा है।

भा.वा.अ.शि.प. में 7 से 14 सितम्बर 2012 को भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 11 से 17 सितम्बर 2012 को हिन्दी सप्ताह आयोजित किया गया। उष्णकटिबन्धीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने 1 से 15 सितम्बर 2012 तक तथा आफरी, जोधपुर में 14 से 28 सितम्बर 2012 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। हिन्दी सप्ताह हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिता जैसे हिन्दी टंकण, हिन्दी में टिप्पण लेखन तथा काव्य पाठ आदि आयोजित किया गया।

डॉ. पी.पी. भोजवेद, निदेशक,
व.अ.सं. हिन्दी सप्ताह के दौरान पुरस्कार प्रदान करते हुए

भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय तथा इसके संस्थान नियमित अंतराल के पश्चात राजभाषा कार्यान्वयन समिति का आयोजन करते रहते है। त्रैमासिक प्रगति प्रतिवेदन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के राजभाषा विभाग को प्रेषित किया जाता है। भा.वा.अ. शि.प. तथा इसके संस्थानों ने 14 सितम्बर 2013 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया। भा.वा.अ.शि.प. तथा इसके संस्थान नियमित रूप से नराकास की बैठकों में सहभगिता करते है।

भा.वा.अ.शि.प. तथा इसके संस्थानों में हिन्दी साफ्टवेयर सारांश पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, बैंगलोर ने संस्थान के अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों के लिए 29 जून 2012 तथा 5 सितम्बर 2012 को राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम तथा लिपिकीय कर्मचारियों के लिए 18 दिसम्बर 2012 तथा 24 जनवरी 2013 को हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गई। वर्ष के दौरान दो निम्नश्रेणी लिपिकों को केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उप संस्थान बैंगलोर में 40 दिवसीय पूर्ण हिन्दी टंकण प्रशिक्षण के लिए प्रति नियुक्त किया गया।

7.6. पुरस्कार एवं सम्मान

- डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. को वर्ष 2012-2016 तक अन्तराष्ट्रीय पॉपलर कमीशन की कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में चुना गया।
- डॉ. दिनेश कुमार, वैज्ञानिक-एफ, वन संवर्धन प्रभाग, व.अ. सं., को अन्तर्राष्ट्रीय पॉपलर कमीशन की कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में वर्ष 2012 से 2016 के लिए चुना गया।
- सुश्री नीतू भट्ट, डॉ. पी. के. गुप्ता तथा डॉ. संजय नैथानी, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 21 से 23 नवम्बर को उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् द्वारा आयोजित सातवीं उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में ''लैन्टाना कमारा-एल्फा सैलूलोज तथा इसके सैलूलोज सल्फेट व्युत्पन्न की तैयारी के लिए एक क्षमतावान खरपतवार'' पर मौखिक प्रस्तुतिकरण के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- डॉ. रश्मि तथा श्री पंकज तिवारी को देहरादून में 21-23 नवम्बर 2012 को आयोजित सातवीं उत्तराखण्ड विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस में *समृद्धि:* रेशम कीट किसानों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का उत्पाद के लिए ''इनोवेटर आफ द इयर'' पुरस्कार 2012 से सम्मानित किया गया।
- डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, वैज्ञानिक-ई, व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को सूखा तथा लवणीय सहशीला विशेष के लिए यूकेलिप्टस पर वाइट पेपर की तैयारी के लिए इंटरनैशनल क्वाइमेंट रीसाइलेंट क्राप जीनोमिक्स कंसोर्टियम के सदस्य के रूप में नामित किया गया है। डॉ. दासगुप्ता को जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग, भारत सरकार द्वारा भारतीय रबड अनुसन्धान संस्थान, कोटायम तथा भारतीदशन विश्वविद्यालय, त्रिची में गठित आई.बी.एस.सी. में डी.बी. टी. प्रतिनिधि के रूप में नामांकित किया गया।
- डॉ. के. के. पांडेय, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर को भा.वा.अ.शि. प. द्वारा वर्ष 2006-2008 के लिए ''वानिकी अनुसन्धान में उत्कृष्टता'' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें 2013 में इंटरनेशनल अकेडमी ऑफ वुड साइंस का फेलो भी चयनित किया गया।
- डॉ. एन. बाला, श्री प्रमोद कुमार, डॉ. एन. के. बोहरा, श्री एन. के. लिम्बा, श्री एस. आर. बालौच तथा डॉ. जी. सिंह, शु.व.अ.सं., जोधपुर को द *इंडियन फॉरेस्टर* द्वारा वर्ष 2010 के लिए उनके अनुसन्धान लेख ''भारतीय रेगिस्तान में नहर वाले क्षेत्रों सहित *यूकेलिप्टस कमल्डूलेन्सिस* के रोपण वनों में खरपतवार का उत्पादन तथा अपघटन'' पर सम्मानित एस. के. सेठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- डॉ. भीमी राम, एस.आर.एफ., वन जैव उत्पादकता संस्थान, हैदराबाद का सी.एम.आर. कॉलेज बैंगलोर में 6 मार्च 2012 को ''कृंतकीय विश्वस्तता के निर्माण के लिए आर.ए.पी.डी तथा आई.एस.एस.आर. मार्करो का उपयोग करते हुए सूक्ष्य प्रवर्धित *मेलिया डूबिया* पादपों का आणिविक विश्लेषण'' पर पोस्टर प्रस्तुतिकरण के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उच्च अधिकारियों का दौरा

- डॉ. टी. सुब्बारामी रेड्डी की अध्यक्षता में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर संसदीय समिति पर्यावरण एवं वन ने 4 जुलाई 2012 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया। समिति ने भा.वा.अ.शि.प. के प्रयासों की सरहाना की। समिति के अध्यक्ष ने माननीय प्रधान मंत्री, माननीय वन मंत्री तथा अध्यक्ष, योजना आयोग को भा.वा.अ.शि.प. के हाल ही में किये गये प्रयासों के सम्बन्ध में पत्र लिखे तथा वानिकी अनुसन्धान को उच्चतम स्तर तक ले जाने के लिए अतिरिक्त बजट आबंटन के लिए अनुरोध किया।
- राजभाषा पर संसदीय समिति की तीसरी उप समिति जिसमें माननीय संसद सदस्य प्रौफेसर अल्का बलराम क्षत्रिय, श्री हुकुम देव नारायण यादव, डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह तथा डॉ. राम प्रसाद थे, ने 29 मई 2012 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून का दौरा किया तथा वन अनुसन्धान संस्थान, तथा भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की प्रगति की निरीक्षण किया।
- महामहिम श्री शेखर दत, माननीय राज्यपाल, छत्तीसगढ़ ने 9 अगस्त 2012 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून का दौरा किया। आगन्तुक उच्च अधिकारियों ने भा.वा.अ.शि.प. तथा व.अ.सं. के अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों के साथ बातचित की तथा वैब पोर्टल http://ntfpmarketwatch.icfre.gov.in/ जो कि एक मूल्य प्रसारण तंत्र है जिससे भारत में अकाष्ट वन उत्पादों के बाजार भाव को देखने में किसानों तथा जनजातीय समुदायों को सहायता मिलेगी, की शुरूवात की।